ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन बंगाल की आर्थिक स्थिति (1757 ई0 – 1772 ई0)

डा0 अवधेश कुमार
प्रवक्ता इतिहास
डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय,
सन्त रविदास नगर, भदोही

प्राचीन काल से भारत का यूरोपीय देशों के साथ व्यापार होता चला आ रहा था। यह व्यापार स्थल तथा जल मार्ग दोनों से होता था। मध्यकाल आते आते यूरोप के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों में अरब व्यापारी महत्वपूर्ण हो गए। आधुनिक काल में भारत के साथ व्यापार करने के लिए पुर्तगाली, डच, अग्रेंज तथा फ्रांसिसी भारत आये। फ्रान्सीसी ये ऐसे व्यापारी थे जिन्होने समुद्र की कठिन यात्राओं को पार करके साहसपूर्ण प्रयासों से भारत पहुचाने में सफलता प्राप्त की। वास्कोडिगामा ने समुद्र के रास्ते भारत पहुचने का मार्ग खोज करके यूरोपीय व्यापारियों के लिए भारत की यात्रा को सुगम बना दिया।

पुतगालियों ने धीरे धीरे भारत के समुद्र के पश्चिमी तट पर अपनी बस्तियाँ बनाना प्रारम्भ किया। इसी क्रम में पुर्तगालियों ने गोआ, दीव, दमन, बसीन तथा बम्बई के निकट पर्याप्त संख्या में बस्तियॉ बनाकर अपने आप को स्थापित किया। [1] पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात व्यापारिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से डचो ने भारत आना प्रारम्भ किया। व्यापार करने के उद्देश्य से डचों ने 1602 ई0 में यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड की स्थापना की। इस कम्पनी के द्वारा डच सुदूर पूर्व के देशों जैसे सुमात्रा, जावा तथा बोर्नियों जैसे देशों के साथ व्यापार करके लाभ प्राप्त करना चाहते थे। भारत के साथ व्यापार करने के लिए डचों ने भारत पहुॅचकर भारत के पश्चिमी तट तथा कोरोमण्डल तट पर अपनी बस्तियॉ स्थापित करना प्रारम्भ किया। [2]

अग्रेंज भी भारत के साथ व्यापार करके लाभ प्राप्त करना चाहते थे। अतः मध्यकाल से ही अग्रेंज भारत आने का मार्ग खोजने के लिए प्रयासरत थे। भारत पहुॅचने के प्रयासो के क्रम में कैप्टन ड्रैक ने एक लम्बी समुद्री यात्रा की। वह पूरे विश्व का भ्रमण करते हुए आशा अन्तरीप होते हुए 1580 ई0 में इंग्लैण्ड पहुॅचे तथा उन्हें अप्रत्याशित लाभ प्राप्त हुआ। उनके द्वारा प्राप्त किया गया लाभ ब्रिटिश क्राउन के एक वर्ष की आय के बराबर था।[3] अग्रेंज व्यापारियों के आगमन के क्रम में राल्फ फिच, भारत आये। वह अपने साथ इग्लैण्ड की महारानी का भारत के बादशाह अकबर के नाम पत्र लेकर आये थे किन्तु उन्हें मुगल बादशाह अकबर से मिलकर वह पत्र प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त नही हो सका। [4] राल फिच गंगा नदी के रास्ते इलाहाबाद, बनारस तथा पटना आदि शहरों तक पहुचें। [5] एशियाई देशों की यात्रा करने के पश्चात राल्फ फिच वापस लन्दन पहुॅचे। उनके द्वारा एशियाई देशों के बारे में पर्याप्त जानकारी इंग्लैण्ड के लोगों को उपलब्ध करायी गई।

भारत की यात्रा करने वाले अनेक विदेशी यात्रियों के द्वारा इंग्लैण्ड में उपलब्ध करायी गई सूचना के आधार पर लन्दन के अनेक व्यापारियों ने मिलकर एक कम्पनी बनाने तथा भारत के साथ व्यापार करने की योजना बनाई जिससे ईस्ट इण्डिया कम्पनी जैसी कम्पनी की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी क्रम में इंग्लैण्ड के व्यापारियों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के औपचरिक गठन हेतु 30 सितम्बर 1600 ई0 को प्रिवी कौसिल के समक्ष उसे विशेषाधिकार प्रदान किये जाने सम्बन्धी प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया।[6] 31 दिसम्बर 1600 ई0 को इग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को पूरब के देशों के साथ व्यापार करने के लिए अनुमति एवं विशेषाधिकार प्रदान कर दिया। इग्लैण्ड की महारानी से विशेषाधिकार प्राप्त होने के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पूरब के देशो के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कुशल कप्तानों के साथ व्यापारिक जहाज भेजना प्रारम्भ किया। इसी क्रम में लम्बी समुद्री यात्रा करने के पश्चात 4 अगस्त 1608 ई0 को विलियम हॉकिन्स भारत पहुॅचे। उस समय मुगल दरबार में पुर्तगालियों की स्थिति काफी मजबूत थी। अतः विलियम हॉकिन्स काफी कठिनाइयों के पश्चात मुगल बादशाह जहागीर से मिल सके। विलियम हॉकिन्स ने मुगल बादशाह जहॉगीर को इंग्लैण्ड के राजा जेम्स का पत्र दिया किन्तु विलियम हॉकिन्स को जहॉगीर की ओर से इस पत्र का कोई जवाब नही मिल सका और इस प्रकार से वह बिना कोई सकारात्मक उत्तर के इंग्लैण्ड वापस लौट गए।[7]

भारत में व्यापार करने हेतु सुविधाये प्राप्त करने के उद्‌देश्य से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पुनः 1615 ई0 में इंग्लैण्ड के राजा का पत्र लेकर सर थामस रो को मुगल दरबार में भेजा, वह 10 जनवरी 1616 ई0 में मुगल दरबार में पहुॅचे।[8] सर थामस रो यह समझ चुके थे कि मुगल दरबार में पुर्तगालियों की स्थिति काफी मजबूत है अतः अग्रेजों को अपने को स्थापित करना होगा। तभी कोई लाभ प्राप्त हो सकेगा। सर थामस रो के कूटनीतिक प्रयासों के फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मुगल साम्राज्य में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त हो गई।[9] सर थामस रो के प्रयासो से मुगल दरबार ने पुर्तगालियों का प्रभाव धीरे धीरे कम होने लगा। सर थामस रो यह भी समझते थे कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए पुर्तगालियों के अलावा डचों की स्थिति को भी कमजोर बनाना होगा। कालान्तर में पुर्तगालियों की स्थिति कमजोर होने के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपनी स्थिति को मजबूत किया तथा सूरत एक महत्वपूर्ण अग्रेंज बस्ती तथा व्यापारिक केन्द्र के रूप में उभरा।[10] 1662 ई0 में बम्बई इंग्लैण्ड के राजा चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन से विवाह के फलस्वरूप दहेज के रूप में प्राप्त हुआ। आगे चल करके ईस्ट इण्डिया कम्पनी को गोलकुण्डा में व्यापार करने का सुनहरा फरमान प्राप्त हुआ किन्तु स्थानीय अधिकारियों के द्वारा की जाने वाली वसूली के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी व्यापार के लिए और अधिक बेहतर परिस्थिति खोजने के लिए प्रयासरत रही। इसी क्रम में मुगल बादशाह के संरक्षण के फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार निरन्तर बढ़ता गया।[11] अग्रेंजो तथा फ्रासीसियों के मध्य आपसी शत्रुता एवं उसके कारण हुए युद्धों का क्रम 1760 ई0 तक चलता रहा। 1760

ई0 में हुए वान्डीवाश के युद्ध के पश्चात फ्रासीसी अग्रेजो से पूर्णतया पराजित हो गए तथा अब भारत में व्यापार करने के लिए केवल अग्रेज ही बचे क्योंकि पुर्तगाली तथा डच पहले ही पराजित हो चुके थे।

1757 ई0 में प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। 1760 ई0 में क्लाइव भारत से इग्लैण्ड के लिए रवाना हुआ। क्लाइव के भारत जाने के पश्चात बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन भ्रष्टाचार तथा कुशासन का दौर प्रारम्भ हुआ। बंगाल के नवाब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौकरों के हाथों की कठपुतली बन गए। कम्पनी प्लासी के युद्ध के पश्चात मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया किन्तु 1760 ई0 में उसे हटा दिया गया और फिर मीरकासिम को बंगाल का नवाब बनाया गया।[12]

1765 ई0 में इलाहाबाद के सन्धि के माध्यम से अवध के नवाब शुजा–उद्–दौला से इलाहाबाद तथा कड़ा के जिले लेकर के उसे अवध का सम्पूर्ण क्षेत्र वापस कर दिया गया। कड़ा तथा इलाहाबाद का जिला मुगल सम्राट को दे दिया गया। शुजा–उद्–दौला के युद्ध के हर्जाने के तौर पर 50 लाख रूपया ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दिया।[13] 1765 ई0 में लार्ड क्लाइव तीसरे और अन्तिम बार भारत आया। इस समय तक मुगल बादशाह की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। भारत में मुगल सम्राट को केवल नाममात्र का शासक स्वीकार किया जाता था किन्तु 1765 ई0 की इलाहाबाद की सन्धि के माध्यम से ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भू–राजस्व का अधिकार प्राप्त हो गया। दीवानी का अधिकार प्राप्त होने के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी कानूनी रूप से एक शासक बन गई। कुछ सुधार करने के पश्चात लार्ड क्लाइव 1767 ई0 में अन्तिम रूप से भारत से इग्लैण्ड चला गया। [14]

1770 ई0 में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा जिससे बंगाल की लगभग एक तिहाई जनसंख्या खत्म हो गई। [15] इस समय तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी 30 सितम्बर 1766 ई0 को लार्ड क्लाइव ने कोर्ट आफ डायरेक्टर्स को एक पत्र लिखा जिसमें उसने कम्पनी की स्थिति का विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखा–

''2–मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि जब मैं यहां पहुंचा, तो मैंने आपकी कम्पनी की हालत लगभग इतनी निराशाजनक पाई कि उससे ऐसे सब लोगों को बड़ा भय होता, सिवा उन लोगों के जो अत्यन्त स्वार्थी उद्देश्यों का अनुसरण करते–करते अपने मालिकों के प्रति क्या कर्तव्य है और सम्मान की भावना क्या है, इससे बहुत दूर हो चुके थे । असमर्थनीय तरीकों से बहुतों के हाथ धनराशि एकाएक लगी थी, उससे वे हानिकर मात्रा तक सब तरह से विलासी हो चुके थे। सारी प्रेसिडेन्सी में दो भयंकर बुराइयां कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही थीं, जिनसे किसी विभाग का लगभग कोई भी आदमी अछूता नहीं रह गया था । हर नीचेवाला धन को इस तरह दांत से पकड़ रहा था कि वह माला–माल हो जाए । इस समय उनमें और उनके बड़ों में यही फर्क रह गया था कि कौन कितना उड़ा सकता है–इसलिए यह ताज्जुब की बात नहीं है कि धन प्राप्त करने का जो मी मौका मिलता है, लोग उसे अपना लेते या

कम्पनी की शक्ति का बेजा फायदा उठाते हैं । कई क्षेत्रों में इन बातों से उनके लाभ की अच्छी तरह पूति नहीं होती, इसलिए वे सामान्य भ्रष्टाचार से सन्तुष्ट न रहकर जबरदस्ती धन ले लेते हैं। बड़े लोग इस तरह धनलाभ के जो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, छोटे लोग उन्हें अपनी हैसियत के अनुपात से अपनाते हैं। इस प्रकार से बुराई संक्रामक है और वह नागरिक तथा सैनिक, मुन्शी, फौजी सिपाही और स्वतंत्र सौदागर तक फैल गई है....... ।[16]

''9–जाहिर है कि मेरे सामने दो रास्ते खुले हुए थे, एक तो सरल रास्ता, वह ऐसा था कि जिससे आसानी से मालामाल हो जाए, और दूसरा कठिन रास्ता था जिस पर किसी ने कदम नहीं रखा था और जिसके हर कदम पर विरोध का सामना था । मैं चाहता तो उसी मौजूदा घरातल पर सरकार का भार अपने ऊपर ले लेता, यांनी मैं गवर्नर कहलाता और इस पद के सम्मान, महत्व और मर्यादा को मिट्टी में मिला देता...। हां, मेरे सामने एक विकल्प था, वह यह कि मैं चाहता तो अपने पद के कर्तव्य को ईमानदारी से करता जाता, भले ही मैं चारों तरफ से असंख्य प्रलोभनों से घिरा हुआ है, जो चालाकी से मेरे चारों तरफ फैलाये हुए थे । इस प्रकार से मुझ पर सब तरह के लांछन लगते रहते, जो ईर्ष्या और क्रोध से ऐसे लोगों के विरुद्ध उत्पन्न किए जा सकते हैं जो सुधार करना चाहते हैं, और बेईमानी से समझौता करने की लज्जा से बचकर जोखिम का सामना करते हैं। मैं एक क्षण के लिए भी इस सम्बन्ध में नहीं हिचकिचाया कि मुझे क्या करना है, मैंने अपने कन्धों पर एक बोझ उठा लिया, जिसे उठाने के लिए सकल्प, अध्यवसाय और मजबूत कांठी की जरूरत है। जब मैंने अपना रास्ता चुन लिया तो मैं यह सोचकर इसके लिए सब कुछ करने को तैयार था कि राष्ट्र को सम्मान यहां तक कि कम्पत्ती का अस्तित्व मेड़ी सफलता पढ़ें निर्भर है।

''12–कम्पनी के नौकरों के अधिकार के अधीन कार्य करते हुए जिन गोरे एजेन्टों ने अत्याचार और दमन के सोते खोले हैं, और उनके अधीन काम करने वाले असंख्य देशी एजेन्ट और सब–एजेन्ट मुझे डर है इस देश में अंग्रेज नाम पर स्थायी कलंक हैं मुझे फिर भी अन्त में यह खुशी है कि मैं एक कार्य की समाप्ति देख रहा हूं, जो इस मामले में ही. नहीं बल्कि बहुत से मामलों में अज्ञातपूर्व सुविधाएं उत्पन्न करेंगी, साथ ही अब तक प्रतिकारहीन अल्प चेष्टाओं से बचाव करेंगी। मेरा मतलब बंगाल, बिहार, उड़ीसा इन प्रान्तों के राजस्व की वसूली तथा सारी भूमि पर अधीक्षकता यानी दीवानी से है । मुगल सम्राट को हमारी सेना और खजाने से मिली सहायता के कारण उन्होंने फौरन कम्पनी को यह अनुदान देना स्वीकार किया और यहः अत्यन्त, असरदार तरीके से, जैसा कि आप चाहते हैं हमें सौंपा गया । नवाब की मर्यादा और शक्ति की रक्षा के लिए उन्हें भत्ता और मुगल सम्राट् को नियमित रूप से कर दिया जाना चाहिए। जो बाकी बचे, वह कम्पनी का है।

13–दीवानी पा जाने से कम्पनी का राजस्व, जहाँ तक कि मैं समझ सकता हूं अगले साल 250 लाख सिक्का रूपयों से अधिक कम न होगा। हां, इसमें आपके पहले के इलाके वर्धमान आदि भी आ

जाते हैं। इसके बाद यह राजस्व पहले से कम से कम 20 या 30 लाख बढ़ जाएगा, शान्तिकाल में कम्पनी के नागरिक और सैनिक खर्च 60 लाख से ऊपर नहीं हो सकते नवाब के भत्ते 42 लाख कर दिए गए हैं और मुगल सम्राट् का कर 26 लाख है, इस प्रकार से कम्पनी को स्पष्ट रूप से 122 लाख सिक्का रुपये या 1,65,0900 पौड बचेंगे.... ।[17]

16–जिस दिन कम्पनी का नौकर भारत पहुँचे, उसी दिन उसे एक मर्यादा प्राप्त होनी चाहिए और पद के अनुसार उसकी सुविधायें धीरे–धीरे बढ़नी चाहिए ये लाभमाल वाले जहाजों, व्यापार की सुविधाओं (आप इसके लाभों से अपरिचित नहीं है) और साथ ही नमक, पान और तम्बाकू पर उसे व्यापार की जो सुविधाएं मिलेंगी, उनसे प्राप्त होगे । ये लाभ उन नए नियमों के अनुसार होंगे जिन्हें इसलिए प्रस्तुत किया कि अब तक इस सम्बन्ध में की जाने वाली अपचेष्टाओं से रक्षा हो।

''19–नागरिक (असैनिक) विभाग पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद अब मुझे आज्ञा दें कि मैं सैनिक विभाग पर भी दो शब्द कहूं। हम आपको जिस बुराई से आगाह करना चाहते हैं, वह यह कि सैनिक विभाग असैनिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करता है और उसके अधिकार से स्वतंत्र होने का प्रयास करता है। उसी प्रकार से पूरी सेना को नागरिक शक्ति के अधीन होना चाहिए। यदि वे किसी समय कौन विभाग श्रेष्ठ है इस झगड़े में पड़े, तो यह समझ कर कि वे देश में कम्पनी के ट्रस्टी हैं, और नागरिक संस्था के अधीन सार्वजनिक सम्पत्ति के अभिभावक हैं, सपरिषद गवर्नर को बहुत लगन के साथ अपना काम करना चाहिए।.।

''26–अब मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं कि मेरा एक लम्बा चौड़ा परिवार है, जिसे एक पिता के संरक्षण की जरूरत है और मैं इस आबोहवा में रहकर अपनी तन्दुरुस्ती खो रहा हूँ और अपनी तकदीर को, साथ ही अपने जीवन को जोखिम में डाल रहा है अब मुझे सिर्फ इस बात की प्रतीक्षा है कि मुझे यह बताया जाए कि मैंने अब तक जो कुछ सेवा की है, उसे आपकी स्वीकृति दी जाती है कि नहीं और मैंने आपके सामने जो नियम पेश किए हैं, वे पूर्णतः या अंशतः आपकी कल्पना के जरूरी सुधारों के साथ तालमेल खाते हैं या नहीं ! यदि आप उन नियमों का समर्थन करें, तो मुझे सन्देह नहीं है कि आप मुझे सिलेक्ट कमेटी के साथ मिलकर फौरन उस कार्य को जिसे मैंने इतनी सफलता के साथ शुरू किया है, समाप्त करने की अनुमति देंगे, ताकि मैं जो अगले साल के अन्त में यूरोप लौटने के लिए कटिबद्ध हूं, उसे पूरा कर सकूं। आशा करता हूं कि मैं बंगाल में फैले हुए आपके कार्यों की उन्नति तथा आपकी हर इच्छा की पूर्ति की रिपोर्ट स्वयं विलायत पहुँचकर दे सकूँ।[18]

इस प्रकार से ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना भारत तथा अन्य पूरब के देशों के साथ व्यापार करने के उद्देश्य की गई थी। भारत में आगमन के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहले अपने यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वियों पुर्तगालियों, डचों तथा फ्रासीसियों को पराजित किया तत्पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय शासकों से व्यापार करने के लिए छूट प्राप्त करने का प्रयास किया। धीरे धीरे ईस्ट इण्डिया

कम्पनी ने बंगाल में अपने आप को स्थापित करने के पश्चात साम्राज्य विस्तार करना प्रारम्भ किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अत्यधिक भ्रष्टाचार व्याप्त था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन स्थापित हो जाने के पश्चात बंगाल की आर्थिक स्थिति निरंतर खराब होती चली गई। बंगाल से प्राप्त होने वाले आर्थिक संसाधनों के आधार ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के अन्य क्षेत्रों में साम्रज्य विस्तार करना प्रारम्भ किया।

सन्दर्भ–

1. मुखर्जी, राम कृष्ण, *द राइज एण्ड फाल ऑफ द ईस्ट इण्डिया कम्पनी,* बर्लिन, 1955, पृ0 21

1. वही

2. कोलिस, मारिश, *ब्रिटिश मर्चेन्ट एडवेन्चर,* लन्दन, 1942, पृ0 48

3. मुखर्जी, राम कृष्ण, *पूर्वोक्त,* पृ0 25

4. अंसारी, मोहम्मद अजहर, *यूरोपियन ट्रेवेलर्स अन्डर द मुगल्स,* इलाहाबाद 1972 खण्ड 1 पृ0 16

5. कार्यवृत्ति, दिनांक 30 सित0 1600 ई0, ब्रूस, जान, *एनल्स आफ आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी,* लन्दन, 1810, खण्ड–I, पृ0 127 में उद्धृत।

6. अंसारी, मोहम्मद अजहर, *पूर्वोक्त,* पृ0 24

7. वही

8. मुखर्जी, राम कृष्ण, *पूर्वोक्त,* पृ0 36

9. *वही*।

10. ब्रूस, जान, *पूर्वोक्त,* पृ0 320

11. दत्त, रोमेश, *इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* खंड–1, नई दिल्ली, (पुनर्मुद्रण) 2006, पृष्ठ–3।

12. मजुमदार, आर0सी0 (सं0), *हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल खंड अपपप द मराठा सुप्रीमेसी,* भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1977, पृ0 339

13. दत्त, रोमेश, *पूर्वोक्त* पृ0 4

14. मजुमदार, आर0सी0 (सं0), *पूर्वोक्त,* पृ0 354

15. लोकसभा समिति की तीसरी रिपोर्ट, 1733 परिशिष्ट पृः 391–398, दत्त, रोमेश, *पूर्वोक्त* पृ0 23–25 में उद्धृत

16. वही

17. वही